

हरिवंशपुराण (फोल्डर नं. ००१२७१)

मुख्य टाइटल

प्रधान सम्पादकीय ----- ५

प्रस्तावना----- ९

विषय सूची ----- २१

संकेत सूची ----- ३६

प्रथम सर्ग

मंगलाचरणके अन्तर्गत अनाद्यनिधन जिनशासन, तीर्थनायक श्री वर्धमान स्वामी...----- १-३

समन्तभद्र, सिद्धसेन, देवनन्दी, वज्रसूरि, महासेन, रविषेण, वरांगचरितके कर्ता... ----- ३-५

सज्जन-प्रशंसा, दुर्जन-निन्दा ----- ५-६

ग्रन्थकर्तृप्रतिज्ञा, ग्रन्थके मूलोत्तर ग्रन्थकर्ता----- ६-७

स्वाध्यायकी उपयोगिता, ग्रन्थ के वर्णनीय अधिकारों का संग्रह ----- ७-११

ग्रन्थकी महत्ता और उसके अध्ययनकी प्रेरणा----- ११

द्वितीय सर्ग

जम्बूद्वीप सम्बन्धी विदेह देशके कुण्पुर ग्राम में राजा सर्वार्थ और रानी श्रीमतीके... ----- १२-१३

भगवान् महावीर स्वामीके गर्भ और जन्म-कल्याणकका वर्णन----- १४-१५

उनका वर्धमान नाम था, तीस वर्षकी अवयस्थामें जिनदीक्षा लेकर उन्होंने १२ वर्ष तक...----- १६-१७

पश्चात् राजगृहीके विपुलाचलपर आये। वहाँ देवोंने एक योजन विस्तृत समवसरणकी...----- १७-१९

श्रावण कृष्ण प्रतिपदाके दिन अभिजित् नक्षत्र में भगवान्की प्रथम देशना हुई...----- १९-२०

गौतम गणधर द्वारा द्वादशांगकी रचना, भगवान् की दिव्यध्वनि श्रवण कर राजा... ----- २१-२३

तृतीय सर्ग

भगवान् महावीरका भरतक्षेत्रके आर्यखण्ड सम्बन्धी अनेक देशोंमें विहार... ----- २४-२७

भगवान् का पंचशैल-राजगृहपर पहुँचना, उसकी प्राकृतिक सुषमाका वर्णन... ----- २७-४०

राजा श्रेणिक गौतम गणधरसे तीर्थकरों, चक्रवर्तियों, बलभद्रों, नारायणों...----- ४०-४१

चतुर्थ सर्ग

अलोकाकाश और लोकाकाशका स्वरूप तथा उसका आकार----- ४२

अधोलोक और ऊर्ध्वलोकका विस्तार तथा वातवल्लयोंका वर्णन व विस्तार ----- ४२-४५

अधोलोककी सात पृथिवियोंका वर्णन, रत्न प्रभा पृथिवी के खरभाग और पंकभागका निरूपण - ४५-४६

अब्बहुल भागमें नारकियोंके बिलोंका वर्णन, सातों पृथिवियोंके पटलोंका वर्णन, घर्मा पृथिवीके

प्रस्तार-क्रमसे बिलोंका वर्णन ----- ४७-४९

द्वितीयादि पृथिवीके बिलों का वर्णन----- ४९-५२

प्रथमादि पृथिवियोंके महानरकोंका वर्णन तथा बिलोंका विस्तार ----- ५२-५३

प्रथमादि पृथिवियोंके इन्द्रकबिलोंका विस्तार ----- ५४-५७

घर्मा आदि पृथिवियोंके बिलोंका परस्पर अंतर ----- ५७-५८

प्रथमादि पृथिवीके प्रस्तारोंमें जघन्य तथा उत्कृष्ट आयुका वर्णन----- ५८-५९

प्रथमादि पृथिवीमें नारकियोंकी ऊँचाईका वर्णन ----- ६२-६३

प्रथमादि पृथिवियोंमें अवधिज्ञानका विषय, मिट्टी की दुर्गन्ध, लेश्याओंका वर्णन... ----- ६६-६७

प्रथमादि पृथिवियोंके नारकी उपपाद स्थानोंसे गिरनेपर उछलना, असुरकुमारकृत... ----- ६७-६८

आगामीकालमें तीर्थकर होनेवाले नारकियोंकी विशेषता, प्रथमादि पृथिवियोंमें...	६८-६९
पंचम सर्ग	
तिर्यग्लोककी व्याख्या, जम्बूद्वीपके मेरुक्षेत्र, कुलाचलादिका विस्तार तथा भरतक्षेत्रके...	७०-७७
कुलाचलोंके सरोवर, उनकी गराई, कमल, कमलोंमें रहनेवाली देवियाँ तथा...	७७-७८
पद्मसरोवरसे निकलनेवाली गंगा, सिन्धु और रोहितास्या नदियोंके निर्गमन-द्वार...	७८-८०
सिन्धु नदीकी गंगा नदीके साथ समानता, अन्य नदियोंके निर्गमन और प्रवाह तथा...	८०-८१
जम्बूद्वीपके समान धातकीखण्ड द्वीपके क्षेत्रकुलाचल आदिका वर्णन, द्वितीय जम्बूद्वीप...	८१-८२
जम्बूवृक्ष और शाल्मकी वृक्षका वर्णन तथा नीलादि कुलाचलों और सीता आदि...	८२-८५
विदेहक्षेत्रके वक्षारगिरि पर्वत, भद्रशाल वन और उकी वेदिकाका वर्णन	८५-८६
विभंगा नदियोंका वर्णन	८६
जम्बूद्वीप सम्बन्धी विदेहक्षेत्रके बत्तीस भेद, उनकी राजधानी आदिका वर्णन	८७
विदेहके कच्छा आदि प्रत्येक क्षेत्रमें बहनेवाली गंगा, सिन्धु आदि नदियोंका वर्णन	८८
वृषभाचल तथा देवारण्य और भूतारण्य वनों का वर्णन	८८-८९
जम्बूद्वीपके मेरु पर्वत तथा जगतीका वर्णन	८९-९६
देवारण्य तथा उसके प्रासाद आदिका वर्णन	९६-९७
संख्यात द्वीपोंके अनन्तर द्वितीय जम्बूद्वीपका वर्णन	९७-९९
लवण समुद्रके विस्तार, पाताल विवर समीपवर्ती पर्वत, गोतम देव, उनके अन्य अन्तर्द्वीप...	९९-१०४
धातकीखण्ड द्वीपका वर्णन	१०४-१०८
कालोदधिका वर्णन	१०८-१०९
पुष्करद्वीपका वर्णन	१०९-११०
मनुष्यक्षेत्र और उसका विस्तार	११०
मानुषोत्तर पर्वतका वर्णन	११०-११२
आदिके सोलह द्वीपसमुद्रोंके नाम, समुद्रोंके जलका स्वाद, समुद्रोंमें त्रसजीवोंका अस्तित्व...	११२-११४
आठवें नन्दीश्वर द्वीपका वर्णन	११४-११६
अरुणद्वीप तथा अरुणसागरमें अन्धकारका वर्णन	११६-११७
कुण्डलवरद्वीप और कुण्डलगिरि तथा रुचकवर द्वीप और रुचकगिरिका वर्णन	११७-११९
स्वयंभूरमण द्वीपके मध्यमें स्थित स्वयंप्रभपर्वतका वर्णन, स्वयंप्रभपर्वतके आगे...	१२०
षष्ठ सर्ग	
पृथिवीतलसे सात सौ नब्बे योजनकी ऊँचाईसे लेकर नौ सौ योजनकी ऊँचाई तक स्थित...	१२१-१२३
मेरु पर्वतकी चूलिकाके ऊपर ऊर्ध्वलोकके सौधर्मादि १६ स्वर्गोंके आठ युगल...	१२३-१२५
श्रेणीबद्ध, प्रकीर्णक तथा संख्यात-असंख्यात योजन विस्तारवाले विमानोंका वर्णन	१२५-१२६
पाँच पैतल्ला ओर चार लखुरोंका वर्णन	१२६-१२७
श्रेणीबद्ध विमानोंका अवस्थानक्षेत्र, उनके शिलापट्टोंकी मोटाई तथा भवनोंकी	
गहराई आदिका वर्णन	१२७-१२८
कौन जीव कहाँ तक उत्पन्न होते हैं	१२८
देवोंमें लेश्याएँ देवोंके अवधिज्ञानका विषय क्षेत्र, देवोंकी ऊँचाई, प्रविचार और देवियोंके उत्पत्ति-स्थानका	
वर्णन	१२८-१२९
सिद्धलोकका वर्णन तथा ऊर्ध्वलोकके वर्णनका समारोप	१२९-१३१

सप्तम सर्ग

काल-द्रव्यका स्वरूप तथा उसका अस्तित्व, व्यावहारिककालके समय, आवली...-----१३२-१३४
परमाणु तथा अवसंज्ञ, त्रुटिरेणु, त्रसरेणु और रथरेणु आदिका वर्णन-----१३४-१३५
व्यवहार पत्न्य, उद्धार पत्न्य, अद्धा पत्न्य तथा उत्सर्पिणी और अवसर्पिणीके...-----१३५-१३७
अवसर्पिणीके प्रथम कालके समय भरतक्षेत्रकी उत्तम भोगभूमि तथा

दस प्रकारके कल्पवृक्षों...-----१३७-१४०

भोगभूमिमें उत्पत्तिके कारणोंका वर्णन करते हुए पात्र-कुपात्र-अपात्रका वर्णन-----१४०-१४१
तृतीय कालके अन्तिम भागमें प्रतिश्रुति आदि चौदह कुलकरोंकी उत्पत्ति और उनके कार्य...१४१-१४५

अष्टम सर्ग

अन्तिम कुलकर नाभिराजके इक्यासी खण्डके सर्वतोभद्र भवनका वर्णन----- १४६
राजा नाभिराजकी महारानी मरु देवीके सौन्दर्यका वर्णन-----१४६-१४८
नाभिराज और मरुदेवीके यहाँ भगवान् ऋषभदेवके गर्भावतारके छह माह पूर्वसे कुबेरके द्वारा...१४८-१५०
मरुदेवीका एरावत आदि १६ स्वप्न देखना देवियोंने उनकी स्तुति की -----१५०-१५२
नाभिराज द्वारा स्वप्नोंके फलका निरूपण और भगवान् ऋषभदेवके गर्भावतारका वर्णन-----१५३-१५४
भगवान् ऋषभदेवका जन्म तथा रुचकगिरिनिवासिनी देवियोंके द्वारा अपने... -----१५४-१५६
जन्म-कल्याणकके लिए देवोंका आगमन और नगरकी तात्कालिक शोबाका वर्णन-----१५६-१५७
जिनबालकको सुमेरु पर्वतपर ले जाकर इन्द्र द्वारा उनका क्षीरसागरके जलसे अभिषेक करना१५८-१५९
इन्द्राणी द्वारा भगवान् को लेप लगाकर अलंकार पहनाना। उनके सुसज्जित शरीरका...-----१५९-१६४
पर्वतसे वापस आकर जिनबालक मातापिताको सौंपना और आनन्द नाटक करना-----१६४-१६५

नवम सर्ग

ऋषभदेवकी बालक्रीड़ा और शरीरकी सुन्दरताका वर्णन-----१६६-१६७
युवा होनेपर उनका नन्दा और सुनन्दा के साथ विवाह----- १६७
कल्पवृक्षोंके नष्ट हो जानेपर भूख-प्याससे विह्वल प्रजाका नाभिराजकी सम्मतिसे...-----१६७-१६९
नीलांजसा नामक नर्तकीको अकस्मात् विलीन देख भगवान् के वैराग्यका होना...-----१६९-१७१
कुबेरनिर्मित पालकीका वर्णन-----१७१-१७३
भगवान्का प्रथम ३२ कदम पैदल चलना, तदनन्तर पालकीपर सवार हो दीक्षास्थानपर... ---१७३-१७४
भगवान्का छह माहका योग लेकर ध्यानस्थ होना तथा साथमें दीक्षित हुए चार हजार... --१७४-१७६
नमि और विनमिको धरणेन्द्र द्वारा विजयार्थकी दोनों श्रेणियोंका राज्य प्रदान-----१७६-१७७
छह माहका योज समाप्त होनेपर भगवान् आहार के लिए निकले-----१७७-१७९
भगवान् जब हस्तिनापुर आनेको हुए तब वहाँके राजा समोप्रभको स्वप्न दर्शन हुआ...-----१७९-१८२
पूर्वतालपुरके शकटास्य नामक वनमें भगवान् को केवलज्ञान उत्पन्न हो गया, समवसरण...१८२-१८४

दशम सर्ग

एक हजार वर्षका मौन खोलकर भगवान् ऋषभदेवने सबको संसार-सागरसे...----- १८५
श्रुतज्ञानके पर्याय, पर्यायसमाप्त आदि २० भेदोंका वर्णन, उसीके अन्तर्गत आचाराग...-----१८५-१९०
दृष्टिवाद अंगके पूर्वगत भेदोंका वर्णन, अंगबाह्यश्रुतका निरूपण, समस्त श्रुतके...-----१९१-१९७

एकादश सर्ग

समवसरणसे वापस आकर भरतने पुत्रजन्मका उत्सव किया और

चक्ररत्नकी पूजा कर दिग्विजयके...-----१९८-२००

उत्तम भरत के म्लेच्छ राजाओं तथा उनके सहायक मेघमुख

देवको परास्त कर समस्त म्लेच्छ...-----२००-२०२

जब चक्रवर्त अयोध्याके प्रवेश-द्वारपर रुक गया तब भरतके पूछनेपर बुद्धिसागर पुरोहितने...२०२-२०४

इस घटनासे बाहुबलीने विरक्त होकर दीक्षा धारण कर ली। उनकी तपस्याका वर्णन-----२०४-२०५

चक्रवर्ती भरतके वैभवका वर्णन-----२०५-२०८

द्वादश सर्ग

भरत समवसरणमें जाकर शलाकापुरुषोंका चरित्र सुनते थे। उन्होंने

तीर्थकरोंके स्मरणार्थ अपने...-----२०९-२११

विद्याधर और विद्याधरीको देख जयकुमार और सुलोचना मूर्च्छित हो गये।

अनन्तर जातिस्मरण द्वारा...-----२११

रतिप्रभ देवके द्वारा जयकुमारके शीलकी परीक्षाका वर्णन-----२११

जयकुमार द्वारा सुलोचनाके लिए भगवान् ऋषभदेवके समवसरणका वर्णन। जयकुमारने...--२११-२१५

त्रयोदश सर्ग

चक्रवर्ती भरतने अर्ककीर्तिको राजय दे दीक्षा धारण कर ली और वृषभसेन आदि...-----२१६

अर्ककीर्ति स्मितयशको राज्य देकर तप द्वारा मोक्षको प्राप्त हुए। सूर्यवंश और चन्द्रवंशके... २१६-२१७

अजितनाथ भगवान्, सगर चक्रवर्ती, उनके अद्भुत आदि

साठ हजार पुर और कालक्रमसे होनेवाले...-----२१७-२१८

चतुर्दश सर्ग

जम्बूद्वीपके वत्सदेशमें कौशाम्बी नगरी थी। उसमें राजा सुमुख राज्य करता था। इस...----२१९-२२०

वसन्त ऋतुका वर्णन-----२२०-२२१

वन विहारके लिए जाता हुआ राजा सुमुख मार्गमें एक सुन्दरीकी सुन्दरतापर आसक्त...----२२२-२२३

मन्त्रीके पूछनेपर राजा सुमुखने उसे अपनी व्यग्रताका कारण बताया और मन्त्री...-----२२४-२२५

सन्ध्या होनेपर सुमति मन्त्रीने आत्रेयी नामकी दूती उस-वनमाला सुन्दरीके

पास भेजी। वनमाला...-----२२५-२२८

पञ्चदश सर्ग

राजा सुमुख और वनमाला प्रमसे रहने लगे। एक बार उन्होंने

‘वरधर्म’ नामक मुनि राजको...-----२२९-२३३

वनमालाके विरहमें उसके असली पति ‘वीरकी’ सेठकी बड़ी दुर्दशा हुई। तदनन्तर वह...----२३३-२३४

‘वीरक’का जीव देव, अवधिज्ञानसे अपनी पूर्व प्रिया ‘वनमाला’ और उसके अपहर्ता...-----२३४-२३६

षोडश सर्ग

भगवान् शीतलनाथके बाद कालक्रमसे नौ तीर्थकरोंके मोक्ष चले जानेपर कुशाग्रपुरके...----२३७-२३८

भगवान् मुनि सुव्रतनाथका जन्म। देवोंने क्षीरसागरके जलसे अभिषेक

कर जन्मोत्सव किया...-----२३८-२४०

शरद् ऋतुका साहित्यिक वर्णन-----२४०-२४१

शरद् ऋतुके चन्द्रतुल्य उज्ज्वल मेघको तत्काल विलीन होते देख उन्हें वैराग्य आ गया... २४१-२४४

दीक्षाकल्याणकका वर्णन, वृषभदत्तके यहाँ आहारका निरूपण, देवोपनीत पंचाश्वर्य-----२४४-२४५

तेरह मासकी छद्मस्थ अवस्था पूर्ण होनेपर उन्हें केवलज्ञान हुआ, देवोंने

समवसरणकी रचना की...-----२४६-२४७

सप्तदश सर्ग

उसी हरिवंशमें मुनिसुव्रतनाथ तीर्थकरके सुव्रत नामका पुत्र हुआ। सुव्रतके दक्ष नामका...----- २४८

राजा दक्षने अपनी पुत्री मनोहरीकी सुन्दरतासे रीझकर उसे अपनी स्त्री

बना लिया। इस घटनासे...-----२४८-२५०

राजा वसु, क्षीरकदम्बकका पुत्र पर्वत और नारदका वर्णने तथा उनके

'अजैर्यष्टव्यम्' वाक्यके...-----२५०-२६१

अष्टादश सर्ग

राजा वसुके बृहदध्वज नामक पुत्रसे मथुरामें सुबाहु पुत्र हुआ। इसे आदि लेकर अनेक... ---२६२-२६३

राजा भोजक वृष्णिकी पद्मावती नामक पत्नीसे उग्रसेन, महासेन आदि पुत्र हुए।

राजा वसुके...-----२६३-२६४

कदाचित् सौर्यपुरके गन्धमादन पर्वतपर सुप्रतिष्ठ मुनिराजको उपसर्गके बाद

केवलज्ञानकी प्राप्ति हुई----- २६४

सुप्रतिष्ठ केवलीके द्वारा धर्मका विस्तृत उपदेश, जिसमें मुनि तथा श्रावकोंके व्रतोंका वर्णन...२६४-२६९

आदिका वर्णन-----२६४-२६९

अन्धकवृष्णिके भवान्तरका वर्णन-----२६९-२७०

अन्धकवृष्णिके समुद्रविजय आदि दस पुत्रोंके भवान्तरोंका निरूपण-----२७०-२७५

सुप्रतिष्ठ केवलीका विहार और समुद्रविजय को राज्यप्राप्तिका वर्णन----- २७५

एकोनविंश सर्ग

राजा समुद्रविजयने अपने आठ छोटे भाइयोंके विवाह किये। वसुदेव अत्यन्त सुन्दर थे... २७८-२७९

एक दिन कुब्जा दासीके द्वारा कुमार वसुदेव को अपने कैद होनेका पता लग गया...-----२७९-२८०

वसुदेवका भारतवर्ष एवं विजयार्ध पर्वतकी दोनों श्रेणियोंमें परिभ्रमण कर अनेक विद्याधर... २८०-२८५

उसी परिभ्रमणके समय वसुदेव चम्पापुरीमें आये और सेठ चारुदत्तकी गन्धर्वसेना...-----२८५-२९७

विंशतितम सर्ग

राजा श्रेणिकके प्रश्नके उत्तरमें गौतम गणधर सम्यग्दर्शनको विशुद्ध करनेवाली विष्णुकुमार...----- २९८

हस्तिनापुरके महापद्म चक्रवर्ती और उनके पुत्र विष्णुकुमारकी दीक्षाका वर्णन। बलि...-----२९८-२९९

किसी समय अकम्पनाचार्य आदि पूर्वोक्त मुनियोंका संघ हस्तिनापुर पहुँचा तो बलि...-----२९९-३०३

एकविंशतितम सर्ग

कुमार वसुदेवके पूछनेपर चारुदत्तने आत्मकथा सुनायी। जिसके अन्तर्गत

चारुदत्तकी उत्पत्ति...-----३०४-३१८

द्वाविंशतितम सर्ग

चम्पापुरी में गन्धर्वसेनाके साथ वसुदेव रह रहे थे कि इसी बीच में फाल्गुनका अष्टाहिका...३१९-३२२

एक समय वसुदेव एकान्त स्थानमें बैठा था, उसी समय एक वृद्ध विद्याधरीने

आकर उन्हें आशीर्वाद...-----३२२-३२७

एक बार एक वेतालकन्या रात्रिके समय वसुदेवको खींचकर श्मशान ले गयी,

वहाँ उसने अपना...-----३२७-३३०

त्रयोविंशतितम सर्ग

कुमार वसुदेव नीलयशाके साथ सुखसे रहते थे। वर्षा ऋतु आयी और उसके बाद शरद...--३३१-३३४

अनार्ष वेदोंकी उत्पत्तिका वर्णन करते हुए सगर राजा, सुलसा और मधुपिंगलकी रोचक कथा...	-----३३४-३४३
चतुर्विंशतितम सर्ग	
कुमार वसुदेवने तिलवस्तु नगरमें जाकर नर-मांसभोजी सौदासको नष्ट किया। इसी प्रकरण...	-----३४४-३४५
कुमार वसुदेवका अचलगामके सेठकी पुत्री वनमालाके साथ विवाह हुआ। तथा वेदसामपुरके...	-----३४५-३५०
पञ्चविंशतितम सर्ग	
मदनवेगाके भाई दधिमुखने अपने पिताको बन्धनसे छुड़ानेके लिए वसुदेवसे प्रार्थना की। इसी...	-----३५१-३५४
दधिमुखकी प्रार्थ सुन वसुदेवने युद्ध द्वारा त्रिशिखरको मारा और अपने श्वसुर को बन्धनसे मुक्त किया	-----३५४-३५६
षड्विंश सर्ग	
कुमार वसुदेवसे मदनवेगाके अनावृष्टि नामका पुत्र हुआ। एक दिन सब विद्याधर अपनी-अपनी...	-----३५७-३५८
एक दिन मदनवेगा कारणवश कुमारसे कुपित हो भीतर चली गयी। इसी बीचमें त्रिशिखर...	-----३५८-३६०
कुमार वसुदेवने नागपाशसे बद्ध बालचन्द्राको छुड़ाया जिससे उसे विद्या सिद्ध हो गयी और...	-----३६०-३६१
सप्तविंशतितम सर्ग	
विद्युद्धंष्ट्रने संजयन्त मुनिपर उपसर्ग किस कारण किया? राजा श्रेणिकके इस प्रकार प्रश्न करनेपर...	-----३६२-३७२
अष्टाविंशतितम सर्ग	
वेगवतीसे रहित वसुदेव एक बार तापसोंके आश्रममें गये वहाँ विकथा करते हुए...	-----३७३-३७७
एकोनत्रिंशत्तम सर्ग	
वसुदेव कुमारका बन्धुमती और प्रियंगु सुन्दरी कन्याओंकी प्राप्तिका वर्णन	-----३७८-३८३
त्रिंशत्तम सर्ग	
कार्तिककी पूर्णिमाकी रात्रिमें कुमार वसुदेव सुखसे सोये हुए थे कि एक अतिशय रूपवती...	-----३८४-३८८
एकत्रिंशत्तम सर्ग	
अनेक कन्याओंको विवाहते हुए कुमार वसुदेव अरिष्टपुर नगर आये और वहाँ के राजा रुधिरकी...	-----३८९-३९९
द्वात्रिंशत्तम सर्ग	
वसुदेवके रोहिणी स्त्रीसे 'राम' नामक पुत्र उत्पन्न हुआ। एक विद्याधरीकी प्रार्थना सुन...	-----४००-४०३
त्रयस्त्रिंशत्तम सर्ग	
वसुदेव शस्त्रविद्याका उपदेश देते हुए सौर्यपुरमें रहने लगे। किसी समय वे कंस आदि शिष्योंके...	-----४०४-४०६
कंस, वसुदेवको मथुरा ले आया और बहन देवकीका उनके साथ विवाह कर दिया	-----४०६

अतिमुक्तक मुनिके द्वारा देवकीका पुत्र तुम्हारे पतिको मारेगा यह भविष्यवाणी सुन कंसकी... -----	४०६-४११
बलदेव सहित, देवकीके सातों पुत्रोंके पूर्वभवोंका वर्णन-----	४११-४१८
चतुस्त्रिंशत्तम सर्ग	
अतिमुक्तक मुनिके मुखसे यह बात सुनकर कि 'हमारे वंशमें बाईसवें तीर्थंकर उत्पन्न होंगे' वसुदेव... -----	४१९-४४७
पञ्चत्रिंशत्तम सर्ग	
अतिमुक्तक मुनिके मुखसे भगवान् नेमिनाथके पूर्वभव सुनकर वसुदेव बहुत प्रसन्न हुए...--	४४८-४४९
तदनन्तर देवकीने स्वप्न-दर्शनपूर्वक कृष्ण को गर्भभमें धारण किया। भाद्रपद मास शुक्ला... -----	४५०-४५२
श्रीकृष्ण नन्द और यशोदाके यहां बढ़ने लगे। निमित्तज्ञानीके कथनसे शंकित हो कंस...--	४५२-४५४
देवकी उपासके बहाने कृष्णको देखनेके लिए गयी। कृष्णकी बालक्रीड़ा और लोकोत्तर... -----	४५४
षट्त्रिंशत्तम सर्ग	
शरद् ऋतुका साहित्यिक वर्णन, श्रीकृष्णको मारनेके लिए कंसके विविध प्रयत्न, मल्लयुद्धके... -----	४५९-४६५
कृष्ण अपने माता-पिता तथा समुद्रविजय आदिसे मिलकर प्रसन्न हुए। सुकेतु विद्याधरने... -----	४६६-४७०
सप्तत्रिंशत्तम सर्ग	
भगवान् नेमिनाथके गर्भमें आनेके छह माह पूर्वसे समुद्रविजयके घर रत्नोंकी वर्षाहोने...--	४७१-४७४
राजा समुद्रविजयने स्वप्नोंका फल बतलाते हुए कहा कि... -----	४७४-४७७
अष्टत्रिंशत्तम सर्ग	
देवोंने भगवान् के माता-पिताका अभिषेक कर वस्त्राभूषणोंसे उनकी पूजा की। शिवा देवी... -----	४७८-४८२
देवियोंके द्वारा जातकर्मका वर्णन-----	४८२-४८३
सौर्यपुरकी अद्भुत शोभा हो रही थी। इन्द्र भगवान् को ऐरावत हाथीपर विराजमान कर...--	४८३-४८६
एकोनचत्वारिंशत्तम सर्ग	
इन्द्र द्वारा भगवान् का स्तवन -----	४८७-४८९
देवों द्वारा शंखादि वादित्तोंका वादन और भगवान् की परिचर्याका वर्णन -----	४९०-४९३
चत्वारिंशत्तम सर्ग	
यादवों द्वारा अपने भाई अपराजितका वध सुन जरासन्ध बहुत कुपित हुआ और उनका... -	४९४-४९७
एकचत्वारिंशत्तम सर्ग	
समुद्रविजय आदिके द्वारा समुद्रकी शोभाका अवलोकन-----	४९८-४९९
कृष्णने अष्टमभक्त कर पंचपरमेष्ठीका ध्यान किया। इन्द्रकी आज्ञासे गौतम देवने समुद्रको... -----	५००-५०३
द्वाचत्वारिंशत्तम सर्ग	
द्वारिकामें नारदका आगमन-----	५०४-५०५
नारदकी उत्पत्ति का वर्णन-----	५०५
नारद कृष्णके अन्तःपुरमें गये परन्तु सत्यभामा अपनी साज-सजावटमें लीन थी... -----	५०५-५०७

अब वे कुण्डिनपुरमें स्थित राजा भीष्मके अन्तःपुरमें पहुँचे। वहाँ रुक्मिणीको देख...	५०७-५१३
त्रिचत्वारिंशत्तम सर्ग	
सत्यभामा और रुक्मिणीके सपत्नीभावका वर्णन	५१४-५१६
रुक्मिणी और सत्यभामाके गर्भका वर्णन तथा दोनोंके पुत्रोंकी उत्पत्तिका निरूपण	५१६-५१७
रुक्मिणीके पुत्रको पूर्वभवका वैरी 'धूमकेतु' नामका असुर हरकर ले	
गया और खदिराटवीमें...	५१७-५१९
रुक्मिणीका विलाप, कृष्णके द्वारा दी गयी सान्त्वना, नारदका आगमन और सीमन्धर...	५१८-५३२
चतुश्चत्वारिंशत्तम सर्ग	
सत्यभामाके पुत्रका नाम भानुकुमार रखा गया। श्रीकृष्णका जाम्बवती, लक्ष्मणा...	५३३-५३७
पञ्चचत्वारिंशत्तम सर्ग	
किसी समय यादवोंके भानेज युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, सहदेव और नकुल द्वारिका आये...	५३८-५४१
लाक्षागृहमें आग लगा देनेसे पाण्डव अपनी माता कुन्तीके साथ अज्ञात रूपसे बाहर...	५४१-५५०
षट्चत्वारिंशत्तम सर्ग	
पाण्डव दुर्योधनके साथ जुआ खेले और अपना सब राज-पाट हारकर बारह वर्ष तक...	५५१-५५६
सप्तचत्वारिंशत्तम सर्ग	
कीचकका उपद्रव शान्त कर पाण्डव हस्तिनापुर वापस आ गये। धीरे-धीरे दुर्योधनका...	५५७-५५८
युधिष्ठिर आदिको लक्ष्मीमती आदि कन्याएँ प्राप्त हुई	५५८
प्रद्युम्नकी चेष्टाओंका वर्णन	५५८-५६०
प्रद्युम्नकी शोभा देख कालसंवरकी स्त्री कनकमाला कामसे वहल हो गयी और...	५६०-५६३
प्रद्युम्नका द्वारिका आना और तरह-तरहकी अद्भुत चेष्टाएँ दिखाना	५६३-५६८
अष्टचत्वारिंशत्तम सर्ग	
सत्यभामाके सुभानु और जाम्बवतीके शम्ब नामक पुत्रकी उत्पत्ति हुई। सुभानु और...	५६९-५७१
यदुवंशके कुमारों का वर्णन	५७१-५७४
एकोनपञ्चाशत्तम सर्ग	
कृष्णकी छोटी बहनकी सुन्दरता और तपस्याका वर्णन। इसी प्रसंगमें मुनिराजने...	५७५-५८०
विन्ध्याटवीमें उसे सिंहने खा लिया सिर्फ तीन अंगुलियाँ बचीं। उनमें त्रिशूलकी...	५८०-५८२
पञ्चाशत्तम सर्ग	
द्वारिकामें यादवों के बढ़ते वैभवको सुन जरासन्धका क्रोध भड़क उठा और वह युद्ध...	५८३-५९२
एकपञ्चाशत्तम सर्ग	
युद्धका अवान्तर वर्णन। राजा रुधिरका पुत्र वीर हिरण्यनाभ मारा गया जिससे एक...	५९३-५९६
द्वापञ्चाशत्तम सर्ग	
युद्ध अपने पूर्ण उत्कर्षपर पहुँच गया और श्रीकृष्णके द्वारा जरासन्ध मारा गया	५९७-६०३
त्रिपञ्चाशत्तम सर्ग	
कृष्ण नारायणके रूपमें प्रसिद्ध हुए। अनेक विद्याधरोंने वसुदेवके साथ आकर कृष्णको...	६०४-६०८
चतुःपञ्चाशत्तम सर्ग	
नारदके द्रौपदीसे रुष्ट होकर अपनी प्रतिशोधकी भावना प्रगट की। और उसका	
चित्र बनाकर...	६०९-६१५
पञ्चपञ्चाशत्तम सर्ग	

श्रीकृष्णकी सभामें नेमिकुमार गये और प्रसंगवश `सबसे अधिक बलवान् कौन है' इसकी परीक्षा.....	६१६-६३४
षट्पञ्चाशत्तम सर्ग	
भगवान् नेमिनाथकी तपश्चर्या और केवलज्ञानकी उत्पत्तिका वर्णन	६३५-६४५
सप्तपञ्चाशत्तम सर्ग	
भगवान् के समवसरणका वर्णन	६४६-६५९
अष्टपञ्चाशत्तम सर्ग	
वरदत्त गणधरके पूछनेपर भगवान् की दिव्यध्वनिमें जीवाजीवादि तत्त्वोंका विस्तृत विवेचन हुआ.....	६६०-६९३
एकोनषष्टितम सर्ग	
भगवान् नेमिनाथके विहारका अनुपम वर्णन	६९४-७०५
षष्टितम सर्ग	
वसुदेवसे देवकीके कृष्ण जन्मके पूर्व जो छह युगल पुत्र हुए थे उनकी तपस्याका वर्णन	७०६
सत्यभामा आदि रानियोंके भवान्तरोंका वर्णन भगवान् की दिव्यध्वनिमें हुआ	७०६-७१५
गजकुमारके निर्वेदका वर्णन। भगवान् नेमिनाथ एक बार रैवतकगिरिपर आये। श्रीकृष्णने.....	७१६-७५३
एकषष्टितम सर्ग	
सोमशर्मा ब्राह्मणकी कन्याको छोड़ गजकुमार मुनि हो गये थे इसलिए उसने रुष्ट होकर... -	७५४-७६२
द्विषष्टितम सर्ग	
श्रीकृष्ण और बलदेव भ्रमण करते-करते कौशाम्ब वनमें पहुँचे, वहाँ कृष्णको प्यासने सताया.....	७६३-७६८
त्रिषष्टितम सर्ग	
पानी लेकर जब बलदेव वापस आये तो कृष्णको चुपचाप पड़ा देख पहले तो जागनेकी प्रतीक्षा.....	७६९-७८३
चतुःषष्टितम सर्ग	
भगवान् नेमिनाथ विहार करते-करते पल्लव देशमें पहुँचे। वहाँ पाण्डवोंने उनसे अपने.....	७८४-७९७
पंचषष्टितम सर्ग	
पाण्डवोंकी तपस्या तथा उपसर्गका वर्णन। बलदेव सौ वर्ष तक तपकर ब्रह्म.....	७९८-८०३
षट्षष्टितम सर्ग	
जरत्कुमारसे यादव वंशकी परम्परा चली। ग्रन्थके अन्तमें भगवान् महावीरके निर्वाणका प्रसंग.....	८०४-८११
परिशिष्टानि	
हरिवंशस्थ-सुक्तयः.....	८१५
हरिवंशपुराणस्थ श्लोकानामकाराद्यनुक्रमः.....	८१७
शब्दानुक्रमणिका.....	८९४